# ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण

## ( Proofs of the existence of God )

मानव आदि काल से ही ईश्वर के सम्बन्ध में अन्वेषण करता आया है। वह यह जानने की कोशिश करता रहा है कि ईश्वर क्या है और इसका क्या स्वरूप है । पर सबसे अधिक दिलचस्पी के साथ उसने यह जानने की कोशिश की है कि ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया जा सकता है या नहीं।

मध्यकाल से लेकर आज तक दार्शनिकों ने इस सम्बन्ध में अनेक शोध किए हैं और ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये हैं जिनका मुख्य आधार चिन्तन या तर्क-वितर्क कहा जा सकता है। इन प्रमाणों को यदि हम परम्परागत युक्तियाँ कहें तो अनुचित नहीं होगा, क्योंकि ये युक्तियाँ आज भी उसी रूप में हैं जिस रूप में ये आरम्भ में ईश्वर को प्रमाणित करने के प्रयास में हमारे समक्ष आयी थीं। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्तमानकालीन दार्शनिकों ने भी इन युक्तियों का सहारा लेकर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास किया है। परम्परागत युक्तियों में तीन मुख्य हैं—तात्त्विक युक्ति ( ontological argument ), विश्व-सम्बन्धी युक्ति ( cosmological argument ) तथा प्रयोजनात्मक युक्ति ( telological argument )। इनके अतिरिक्त एक ईश्वरवादी युक्ति और भी है, जिसे नैतिक युक्ति ( Moral argument ) कहा जाता है। अब हम इन सब का अलग-अलग अध्ययन करेंगे।

Scanned by TapScanner

'ईश्वर का अस्तित्व है' अथवा 'ईश्वर की सत्ता है' इसके लिए धर्म-दर्शन में अनेकानेक प्रमाण या तर्क दिये जाते हैं। सभी प्रमाण या तर्क ईश्वर को सिद्ध करने के साधन माने जाते हैं। साधन से साध्य की सिद्धि होती है, अर्थात् तर्क से ईश्वर की सत्ता सिद्ध होती है; परन्तु ईश्वर की सत्ता के लिए प्रमाण धर्म-दर्शन के लिए महत्वपूर्ण हैं, उपयोगी हैं, धर्म के लिए नहीं। धर्म में ईश्वर की सत्ता अनुभवगम्य मानी जाती है, तर्कगम्य नहीं। धार्मिक सन्त या महात्मा ईश्वर का साक्षात्कार करते हैं, ईश्वर का सद्यः अनुभव करते हैं, उन्हें सिद्ध नहीं करते। इसीलिये कहा जाता है कि यथार्थ में ईश्वर के लिए स्वानुभव ही एकमात्र प्रमाण है—"स्वानुभूत्येक-मानाय"—भर्तृहरि। परन्तु धर्म-दर्शन में ईश्वर की सत्ता के लिए बौद्धिक प्रमाण दिये जाते हैं। अतः धर्म-दर्शन के लिए ईश्वर तर्कगम्य या बुद्धिगम्य है। यहाँ धर्म और धर्म-दर्शन का भेद स्पष्ट है। धर्म के क्षेत्र में ईश्वर आस्था का विषय माना जाता है परन्तु धर्म-दर्शन के क्षेत्र में इस आस्था को तर्क से सिद्ध किया जाता है। धर्म में ईश्वर तर्क या बुद्धि के परे है परन्तु दर्शन में ईश्वर अबौद्धिक नहीं वरन् बौद्धिक है। यह धर्म-दर्शन की विशेषता है। प्रमाण या तर्क से जिसे सिद्ध किया जाता है, वह प्रमेय कहलाता है। वस्तुतः ईश्वर अप्रमेय है, क्योंकि मानव की बुद्धि में बुद्धि के परे अर्थात् अबौद्धिक विषयों पर विचार करने की शक्ति नहीं। अतः ईश्वर के सम्यक् ज्ञान के लिए बौद्धिक विचार को असफल प्रयास ही माना जाता है, परन्तु धर्म-दर्शन बौद्धिक तर्कों के द्वारा अप्रमेय ईश्वर को भी प्रमेय बना देता है। यहाँ एक स्वाभाविक प्रश्न उपस्थित होता है—ईश्वर अवाङमनसगोचर है, इन्द्रियातीत, बुद्ध्या-तीत है, इसके लिए बौद्धिक तर्क कहाँ तक प्रामाणिक हैं? दूसरे शब्दों में ईश्वर के लिए दिये गये प्रमाणों की प्रामाणिकता क्या है, या उनका औचित्य क्या है? अधिक स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि तर्क या प्रमाण तो मानव बुद्धि की देन है और ईश्वर मानव बुद्धि के परे है। अतः जो बुद्धि की सीमाओं के परे है (यो बुद्धेः पर-तस्तु सः—गीता), उसके लिए बौद्धिक प्रमाण या तर्क देना कहाँ तक न्याय-संगत या उचित है? हम ईश्वर के लिए अनेकानेक प्रमाण तो देते हैं परन्तु भूल जाते हैं कि ईश्वर प्रमाणों के परे है। पुनः प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इन प्रमाणों की उपयोगिता क्या है? धर्म-दर्शन में इन्हें अत्यन्त उपयोगी माना जाता है, क्योंकि इन

Scanned by TapScanner

प्रमाणों के द्वारा ही ईश्वर के स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है। जिसके कारण उनका स्वरूप अधिक स्पष्ट हो जाता है। अतः कहा जा सकता है कि ये प्रमाण पूर्णतः प्रामाणिक नहीं, परन्तु उपयोगी अवश्य हैं। इनकी अप्रामाणिकता से अनुपयोगिता नहीं सिद्ध होती।

( क ) धर्म-दर्शन ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण देकर आस्था और विश्वास को दृढ़ करता है। तर्क और विश्लेषण के माध्यम से ईश्वर का स्वरूप और उसका गुण अधिक स्पष्ट होता है। इससे हमारी आस्था और विश्वास को बल मिलता है। अतः यह विश्वास को बढ़ाने का कार्य करता है।

( ख ) यह ईश्वर के प्रति अन्धविश्वास को दूर करता है। धर्म में हम ईश्वर को मान लेते हैं, परन्तु धर्म-दर्शन में इस मान्यता को तर्क से सिद्ध करते हैं। सिद्ध करने की प्रक्रिया में मान्यताओं का खरा और खोटा स्वरूप स्पष्ट दिखलायी पड़ने लगता है। इससे अन्ध-विश्वास का अन्त होता है। प्रायः हम धार्मिक मान्यताओं को आँखें बन्द कर मान लेते हैं। इस मान्यता के माध्मम से हम कुछ ऐसी चीजों को भी स्वीकार कर लेते हैं जो तर्क या युक्ति के परे हों, परन्तु जब हम तर्क का प्रयोग करते हैं तो मान्यताओं से अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता का अन्त हो जाता है।

( ग ) तर्क और प्रमाण के प्रयोग से ईश्वर को ऐतिहासिक रूप में देखने का हमें अवसर मिलता है। भिन्न-भिन्न युगों में ईश्वर सम्बन्धी विचार हुए हैं। इन विचारों के माध्यम से ईश्वर का स्वरूप भी भिन्न-भिन्न प्रतीत होता है। हम एक युग के विचारों की तुलना दूसरे युग के विचारों से करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि एक युग का ईश्वर दूसरे युग के ईश्वर से किस प्रकार भिन्न है। यह भेद-ज्ञान तर्क या प्रमाण के अधीन है।

( घ ) प्रो० लाट्जे ने ठीक ही कहा है कि ईश्वर के अस्तित्व के लिए दिये गये प्रमाणों से ईश्वर में आस्था के औचित्य का पता लगता है। हम ईश्वर के प्रति आस्था तो रखते हैं परन्तु हमारी आस्था उचित है या नहीं, इसका ज्ञान हमें तर्क या प्रमाण से ही होगा। इससे स्पष्ट है कि ईश्वर के लिए दिये गये प्रमाणों का उपयोग है।

Scanned by TapScanner